शीर्षक : विद्यालय में नामांकन दर बढ़ाने में विद्यालय प्रमुख की भूमिका

National Institute of Educational Planning and Administration (Deemed to be University)
National Centre for School Leadership

विद्यालय नेतृत्व अकादमी
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद–छत्तीसगढ़
रायपुर–492007

संरक्षण एवं मार्गदर्शन

श्री राजेश सिंह राणा (आई.ए.एस.)
संचालक
एस.सी.ई.आर.टी. छत्तीसगढ़, रायपुर

डॉ. योगेश शिवहरे
अतिरिक्त संचालक
एस.सी.ई.आर.टी. छत्तीसगढ़, रायपुर

श्रीमती पुष्पा किस्पोट्टा
उपसंचालक
एस.सी.ई.आर.टी. छत्तीसगढ़, रायपुर

एवं

प्राचार्य
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बस्तर

समन्वयन

श्री डी. दर्शन
नोडल अधिकारी स्कूल लीडरशीप अकादमी
एस.सी.ई.आर.टी. छत्तीसगढ़, रायपुर

माड्यूल लेखन समन्वयन

श्री गौरव शर्मा

लेखक

चन्द्रकांत पानीग्राही

व्याख्याता

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाईट) बस्तर

शीर्षक : विद्यालय में नामांकन दर बढ़ाने में विद्यालय प्रमुख की भूमिका

क्षेत्र - छात्रों की दर्ज संख्या बढ़ाने में प्राचार्य की भूमिका।

उद्देश्य -

भारत के छात्र पढ़ लिख कर दुनिया भर के देशों में अपनी सेवाऐं दे सकेंगे, ऐसी शिक्षा की व्यवस्था नई शिक्षा नीति 2020 में की गई है। वर्ष 2030 तक देश के समस्त बच्चों को शाला में दर्ज होकर अध्ययन करना आवश्यक होगा। वर्ष 2030 तक देश में सम्पूर्ण साक्षरता का लक्ष्य रखा गया है जिससे वर्ष 2050 तक भारत दुनिया की तीसरी विकसित अर्थ व्यवस्था वाला देश बन सकेगा। इस देश की शक्ति भारत की आने वाली युवा पीढ़ी है जिनको शिक्षा के द्वारा सशक्त बनाना है इससे देश मजबूत और खुशहाल होगा समृद्धि आएगी। देश महाशक्ति बन जायेगा। देश के सभी शैक्षणिक संस्थाओं के प्रमुख की जबावदारी सुनिश्चित है। ''आचार्य देवोःभवः बाल देवो भवः''।

की-वर्ड –

प्रवेशोत्सव, शाला त्यागी, आंगनबाड़ी, आजिविका, सहभागिता, नवाचार, घूमन्तू, कमजोर वर्ग।

प्रस्तावना -

किसी भी विद्यालय में अध्यापन व्यवस्था को सुचारू रूप से संपन्न करने के लिए विद्यालयीन वातावरण में अध्ययन हेतु छात्रों की महती आवश्यकता होती है, इनके अभाव या न्यू नामांकन होने से विद्यालय की रौनक बढ़ नहीं पाती। लिहाजा नामांकन की दर को बढ़ाने हेतु हेड टीचर्स की भूमिका का विशेष महत्व होता है। विद्यालय प्रमुख के विशेष प्रयासों से संस्था में दर्ज संख्या बढाया जा सकता है। उनकी अभिरूचि से निम्न नामांकन वाली संस्थाओं में उच्च नामांकन दर्ज

कराया जा सकता है। विद्यालय में छात्रों के हलचल से विद्यालयी वातावरण में चहुओर अनुगुंज बनी रह सकती है। संस्था में अध्यापन हेतु शिक्षकों की संख्या भी छात्रों के अनुपात से बढ़ सकती है, जिसका लाभ सामान्य छात्र-छात्राओं को ज्ञान के रूप में अधिगम प्राप्त हो सकता है।

प्रश्न-3 नामांकन की दर बढ़ाने में किसी भूमिका होती है?

.....

.....

.....

प्रश्न-4 शालात्यागी बच्चों को किस प्रकार संस्था में वापस ला सकते है?

.....

.....

.....

उद्देश्य नामांकन दर बढ़ाने हेतु विद्यालय प्रमुख का प्रयास -

विद्यालय प्रमुख। हेड टीचर अपने कार्य व्यवहार से क्षेत्र के लोगों जनप्रतिनिधियों, पालकों और अपने स्टाफ के सहयोग से विद्यालय का नामांकन दर बढ़ाने हेतु सतत प्रयास करता है। यदि प्रा.शा. की दर्ज संख्या बढ़ाना है तो आंगनबाड़ी संस्था में अध्ययनरत बच्चे ही शाला में दर्ज होंगे तथा उनका ग्राम शिक्षा रजिस्टर में दर्ज का जो लक्ष्य है वह ही बच्चे लाभान्वित होंगे इसके अतिरिक्त हेड टीचर की क्रियाशीलता से लक्ष्य से अधिक बच्चे शाला में नामांकन ले सकते हैं। नवीन आगन्तुक परिवार जैसे ट्रांसफर से आये विस्थापित, कमाने खाने परिवार, घूमन्तू परिवार और नये खुले विभाग या अन्य लोग जो विद्यालय की ख्याति सुनकर नामांकन कराने स्वयं होकर आते हैं। यदि विद्यालय में अच्छी पढ़ाई और प्रगति हो रही है तो दूर से भी पालक अपने बच्चों को लाकर पढ़ाने हेतु हेड टीचर से आग्रह कर नामांकन हेतु प्रयास करते हैं।

इसी प्रकार पूर्व मा.शा. में अपने लाभान्वित संस्थाओं से सतत संपर्क कर उनके सहयोग से कक्षा 6वीं में नामांकन हेतु टी.सी. प्राप्त कर लक्ष्य निर्धारण किया जा सकता है। लक्ष्य से अधिक नामांकन हेतु छात्रों के सहयोग, पालक और जन प्रतिनिधि के साथ अच्छे स्वस्थ संबंध बनाकर अन्यत्र पढ़ने वाले छात्रों को भी अपनी संस्था से जोड़कर दर्ज कराया जा सकता है। बच्चे भी अपने मित्रों को अपने साथ पढ़ने हेतु संस्था में लाने के लिये सहायक होते हैं, यदि हेड टीचर बच्चों से अच्छे समन्वय बनाकर चलते रहे। SMC और स्व सहायता समूह के माध्यम से भी अन्य क्षेत्रों के छात्रों/शाला त्यागी बच्चों को भी स्वयं की संस्था में नामांकन करने में सहायक हो सकते हैं।

केस स्टडी -

जिला मुख्यालय से 15 किमी दूरी पर ग्राम ढोडरेपाल में एक प्राथमिक शाला स्थित है उसके पीछे सघन साल वन के जंगल में खुली जेल का निर्माण किया गया था। इसी गांव में एक वन रक्षक की पोस्टिंग होने पर निवास हेतु परिवार सहित शालाग्राम में आना हुआ, उनकी तीन पुत्रियों को अलग-2 कक्षाओं में प्रवेश कराया गया। संयोगवश गांव के जंगल में ''खुली जेल'' का शुभारंभ

शासन द्वारा किया गया। जेल प्रहरियों के बच्चों को भी हमने प्रयास कर अपने संस्था में दर्ज किया। पढ़ाई अच्छी होने लगी खेल-कूद तथा अन्य पाठ्योत्तर गतिविधियों के सुचारू संचालन होने पर आसपास के अन्य जागरूक पालकगण अपने बच्चों को स्वयं लाकर इस संस्था में दाखिला कराने लगे, जिससे हमारी संस्था में लक्ष्य से ज्यादा प्रतिवर्ष नामांकन होने लगा था। प्रति शनिवार दस्तक देकर छात्रों और पालकों के समूह द्वारा शाला त्यागी बच्चों को भी शाला से जोडा गया, जिसकी खबर सुनकर तत्कालीन जिलाधीश प्रवीरकृष्ण जी ने स्वयं आकर विद्यालय का निरीक्षण कर शिक्षकों को पीठ ठोककर शाबासी प्रदान की थी।

मुख्य सामग्री -

हायर सेकेण्डरी विद्यालयों में नामांकन दर वृद्धि हेतु संस्था के सहायक संस्थाओं से संपर्क कर आठवीं उत्तीर्ण या दसवीं उत्तीर्ण छात्रों को प्राचार्य/हेड टीचर के माध्यम से संकलित कराने पर संस्थाओं के समस्त उत्तीर्ण छात्र/छात्राओं को अपनी संस्था में प्रवेशित कराया जा सकता है। इसके अलावा पिछले वर्ष में दर्ज से वंचित छात्रों को भी खोजकर प्रवेश कराया जा सकता है। नामांकन बढ़ाने हेतु विद्यालय में भव्य प्रवेशोत्सव का आयोजन कराया जा सकता है। आयोजन में पालकगण, जनप्रतिनिधिगण, शिक्षकगण और मीडिया के लोगों को आमंत्रित करके किया जा सकता है। आमतौर पर आम गरीब परिवारों के बच्चे आजीविका संबंधी कार्यो पर लगे होने के कारण शाला त्यागी हो जाते है ऐसे बच्चों के पालकों से संबंध बनाकर उन्हें पढ़ाई हेतु शाला में दर्ज करने पर पालक आपत्ति नहीं करते हैं। इसके लिए हेड टीचर को कुछ अलग करने की कामना होनी चाहिए। छात्राऐं भी घर परिवार के कार्यों में लगी रहती है, उन्हें भी शिक्षा से जोड़ने हेतु समाज के कमजोर वर्ग के पालकों से संपर्क कर दर्ज करने हेतु आग्रह करना चाहिए।

शासन द्वारा प्रदत सारी लाभकारी योजनाओं की जानकारी छात्रवृत्ति, सरस्वती सायकल विवरण, गणवेश, निशुल्क पाठ्यपुस्तकें इत्यादि की लाभ दिलाकर नामांकन दर वृद्धि की जा सकती है। घूमन्तू परिवारों के बच्चों को छात्रावास सुविधा देकर उन्हें शिक्षा की मुख्य धारा से जो जोडा जा सकता है। मात्रहीन पित्रहीन छात्रों को भी इन अवसरों का लाभ देकर हम शिक्षा दान कर सकते हैं।

कक्षा संचालन -

शिक्षण एक चुनौति पूर्ण व्यवसाय है क्योंकि षिक्षकों के ऊपर राष्ट्र निर्माण का गुरूतर दायित्व होता है बेहतर स्त्रोत शिक्षकों के द्वारा कक्षा कक्ष में विषयों का अध्यापन कार्य शिक्षकों के प्रदर्शन के द्वारा संख्या की ख्याति चहुओर फैल सकती है। शिक्षक दैनंदिनी के आधार पर शिक्षक पाठ को गतिविधि के आधार पर TLM के द्वारा अध्यापन कार्य को प्रमुखता से पढ़ाते है। ब्लैक वोर्ड का उपयोग करते हैं, चित्रों को स्वयं बनाकर छात्रों को बनाने हेतु प्रेरित करते हैं। कक्षा में अपने सौ फीसदी ज्ञान का उपयोग कर छात्रों को विषय की गहराई को समझाकर उन्हें सरलतम रूप में हल करना सिखाया जाता है। लर्निंग आऊट क्रम LOS को आधार मानकर पाठ का अध्यापन शिक्षक करते हैं। कक्षा में आंकलन हेतु प्रश्न भी पूछते हैं जिससे छात्रों की पुनरावृत्ति होती है, साथ ही कक्षा में चैतन्यता बनी रहने पर पुरी कक्षा जीवत रूप में चलती है। गृह कार्य के लिए छात्रों को प्रतिदिन शिक्षक प्रति कालखंड अभ्यास हेतु प्रश्न देकर उत्तर हल

करने हेतु दिया जाता है, उन्हें जॉच परख भी किया जाता है। जिससे छात्रों की उपलब्धिस्तर का पता चल जाता है, कमजोर छात्रों को अतिरिक्त समय में उपचारात्मक शिक्षक के द्वारा उन्हें कमियों को दूर करने हेतु प्रेरित किया जाता है। विभिन्न प्रकार की शिक्षण विधियों का उपयोग करते हुए छात्र केन्द्रित विधियों का प्रयोग किया जाता है। कक्षा कक्ष को स्मार्ट क्लास के रूप में रूपान्तिरित किया जा चुका है, पावर पाईंट, चित्र, विडियोस, नक्शे, पहाड़, जंगल, नदी, पुल इत्यादि समस्त जानकारी कम्प्यूटर के द्वारा छात्रों को प्रदान किया जा रहा है। छात्रों को चुनौतियां दी जाती है, जिन्हें वे स्वीकार कर अपने-अपने विषयों में दक्षता हासिल कर रहे हैं।

संस्था में संगीत, योग, खेल कूद और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन प्रतिदिन व साप्ताहिक आयोजित करनेका प्रयासकर निर्धारण समय चक्र विभाग में किया गया है। संस्था में NCC NSS और स्काऊट गाइड के प्रभाग हैं और उनके प्रभारी संस्था के छात्रों को प्रशिक्षित कर रहे हैं। वैखिक महामारी के समय जब शैक्षणिक संस्थाऐं बंद थी उस काल में संस्था के शिक्षकों ने मोबाईल के द्वारा आनलाईन कक्षाओं का संचालन कर सारे छात्रों तक पहुंच वनाकर उन्हें मार्गदर्शन दिया, उन्हें संकटों से उबारा। हताश के समय उन्हें धैर्यक के साथ आगे बढ़ने का रास्ता दिखाया गया। इस तरह संस्था से सारे स्त्रोत शिक्षक अपने अपने विषयों को पुरी क्षमता के साथ पाठ का अध्यापन कराते हैं, जिससे संख्या में सतत प्रगति हो रही है।

प्रश्न-5 शाला प्रवेशोत्सव किस प्रकार आयोजित करना चाहिए?

.....

.....

.....

प्रश्न-6 लर्निंग आउट कम को TLM के माध्यम से किस प्रकार सिखा सकते हैं ?

.....

.....

.....

गेस्ट लेक्चर की व्यवस्था -

संस्था में छात्रों के स्तर को शिखरत्न प्रदान करने हेतु विभिन्न कौशलों की समझ विकसित करने हेतु समय-समय पर साप्ताहिक गेस्ट बुलाकर व्याख्यान दिये जाने की परम्परा का प्रारंभ किया गया है। क्षेत्र के प्रतिष्ठित डाक्टर, इंजिनियर जेलर, पुलिस अधिकारी, जन प्रतिनिधि, पत्रकार, समाजसेवी किसान, व्यापारी और अन्यान्य ख्याति नाम लोगों से भाषण और मार्गदर्शन से कौन सा क्षेत्र किस छात्र हेतु सुगम है यह तय करने में छात्र को सहुलियत होती है। केरियर के क्षेत्र में इनके मार्गदर्शन से रोजगार हेतु प्रेरणा प्राप्त होती है। कला के मर्मस से नृत्य, संगीत के क्षेत्र में प्रतिभा का निर्माण होता है। संवाद कौशल, लेखन कौशल, तकनीकी कौशल की आवश्यकता समय की मांग है? कम्प्यूटर के ज्ञान से छात्रों को अपने विषयों को समझने में सहायक सिद्ध हो रहा है। छात्र संसद में संवाद का आयोजन करने पर राजनीति की बारीकियॉ को समझ सकते हैं। यहां यह उल्लेखनीय है कि, आज छात्र अपने स्वयं से भी प्रयास करके

अधिक जानकारी इंटरनेट/मीडिया से संग्रह करते रहते हैं, शैक्षिक तकनीक का प्रयोग हमारी संस्थाओं में ICT के द्वारा किया जा रहा है। विद्यालय के इन प्रयासों से नामांकन की दर में उत्तरोतर वृद्धि होना सुनिश्चित हो रहा है।

नवाचारी गतिविधियॉ -

विद्यालय के समस्त शैक्षणिक गतिविधियों के साथ-साथ शिक्षक छात्रों को नवीन नवाचारी गतिविधियों का समावेश अपने कक्षा-कक्ष में प्रदर्शित करते हैं, इनको विद्यालय प्रमुख द्वारा सतत मार्गदर्शन मिलता रहता है। कमजोर वर्ग के छात्रों को विद्यालय से जूते और शैक्षणिक आवश्यकताओं की पूर्ति अन्य दानदाताओं, संगठनों के द्वारा प्रदत किऐ जाते हैं। लियो कलब, लापंस कलन के सहयोग से खेल सामग्री वर्ष में एक बार दिये जाते हैं। छात्रों के दर्शनीय स्थलों का भ्रमण कराया जाता है। शिक्षक/छात्र मिलजुल कर भोजन की व्यवस्था करते हैं, दिन भर शैक्षणिक और अन्याय गतिविधियों के साथ भ्रमण/पिकनिक की समाप्ति की जाती है। भ्रमण के पश्चात संसमरण को लिपिवद्ध करने की सीख की जाती है। हमारे जिले में चित्रकोट जलप्रपात, कोटमसर की गुफाऐं, तीरथगढ़, जलप्रपात, सघन वन, नदी, नाले, पर्वत, ऐतिहासिक महत्व की भवनों, मंदिरों पुरातात्विक स्थलों के कारण यह क्षेत्र दर्शनीय है। बैलाडीला के पहाड़ों

पर लोहे की खदानों में NMDC के कार्य होते हैं, बांस की बहुतायत होने से यहां पर बांस से बनी कलाकृतियॉ देखने योग्य है, काष्ठ कला भी उत्कृष्ट है, इससे यहाँ पर हजारों लोग सीधे रोजगार से जुड़े हैं। वनों के दर्शन से छात्रों को इनका महत्व, पर्यावरण का ज्ञान तथा जीवन में इनके अनुप्रयोग के विषय में महत्वपूर्ण जानकारियॉ प्रदान की जाती हैं। विद्यालय का वातावरण आकर्षक है, इसकी चर्चा यहां के शिक्षकों की चर्चा समस्त क्षेत्रों तक की जाती हैं, कई विकासखण्ड और संकूलों में इस विद्यालय की उदाहरण दी जाती है, यहां छात्र शिक्षक अनुपात बहुत अंतर है फिर भी तपस्वी शिक्षकों ने एक-एक छात्र का सम्पूर्ण बायोडाटा तैयार किया हुआ है। कक्षा के अधिकतम छात्र वार्षिक बोर्ड परीक्षाओं में उत्कृष्ट नम्बरों में उत्तीर्ण हो रहे हैं। प्रतिवर्ष जिले के द्वारा संस्था को या छात्रों को पुरूस्कार किसी न किसी क्षेत्र में दिये जा रहे हैं। क्षेत्र के पालकों का झुकाव विद्यालय की ओर बना हुआ है। अपने बच्चों को नामांकन कराने हेतु स्वयं ये संस्था में आकर प्रवेश कराते हैं। संस्था में समयानुसार, भाषण, निबंध वाध विक्द नाटक नृत्य की प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है, जो सभी आयु वर्ग और कक्षा के अनुसार निर्धारित होता है। प्रश्नोत्तरी के द्वारा इनको क्विज स्पर्धाओं में शामिल होने हेतु तैयार किया जा रहा है। इस संस्था के छात्र/छात्राओं का नाम जिले के प्रत्येक कार्यक्रमों में शामिल कराया जाता है, इस कारण ये उत्साहित रहते हैं। स्वतन्त्रता दिवस और गणतन्त्र दिवस के मुख्य समारोह जिले मुख्यालय के आयोजित किये जाते है, इन समारोहों में संस्था के छात्र परेड, व्यायाम, नृत्य, जैसी विधाओं में शामिल हो कर संस्था को गौरवान्वित करते रहते हैं, जहॉ मुख्य अतिथि द्वारा इन्हें पुरूस्कार प्रदान किया जाता है। समय-समय पर नशा मुक्ति और साक्षरता का संदेश देने हेतु रैलियो के आयोजन किये जाते है।

नवाचारी प्रयोगशाला -

प्रयोगशाला कक्ष में अनेकों मॉडल, चित्र, चार्ट के साथ, सूक्ष्मदर्शी, यंत्र, प्रोजेक्टर लगाकर पढ़ाई कराना, प्रयोग कराना, दिखाना सिखाना और छत में तारामण्डल, दीवारों पर आवृत सारवी, ph मान, कंकाल तन्त्र का मॉडल, कृषि प्रयोगशाला कक्ष में, स्पेयर (कीट नाशक छिड़काव यंत्र) विविध प्रकार की सामग्रियॉ। इसी प्रकार आटो मोबाईल प्रयोगशाला में कम्प्रेशर मशीन, टूल बाक्स, प्लग टेस्टर, वर्नियर केलिपर्स, स्क्रूगेज, डायल गेज, पुराना बाईक, विभिन्न प्रकार के पाना को प्रदर्शित कर उनका उपयोग के साथ रखरखाव की जानकारी प्रदान की जा रही है।

Link : https://youtu.be/1oYedjSZh4

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, करितगॉव,

विकासखण्ड-बकावण्ड, जिला-बस्तर

प्रश्न-7 गेस्ट लेक्चरर की व्यवस्था क्यों करनी चाहिए?

.....

.....

.....

प्रश्न-8 नवाचारी प्रयोगशाला से छात्रों को क्या-क्या लाभ हो सकता है ?

.....

.....

.....

(कृषि, आटो मोबाईल, स्टेनोग्राफी)

व्यवसायिक शिक्षा-संस्था में नामांकन दर की वृद्धि को सतत वृद्धि हेतु संस्था में कृषि संकाय को प्रारंभ किया गया है, इसमें अध्ययन हेतु छात्र/छात्राओं ने रूचि लेकर दर्ज कराना आरंभ कर दिया गया। कृषि संकाय के प्रारंभ होने से विद्यालय के छात्रों के अलावा पालकों में भी हर्ष व्याप्त है। कृषि बाहुल्य क्षेत्र होने के कारण क्षेत्रवासियों ने कृषि संकाय को लेकर संस्था में कृषि अधिकारियों को समय-समय पर बुलाकर उनके मार्गदर्शन से छात्रों को लाभ होगा, नये और आधुनिक कृषि के संबंध में जानकारियॉ मिलती रहेगी। फलोद्धान फूलों की खेती, वानिकी तथा सब्जियों की उन्नत खेती पर निरंतर गांव में आकर कृषि अधिकारीगण समझाते रहते हैं। कीटनाशक तथा कवकनाशकों का प्रयोग पढ़े लिखे छात्र आगे चलकर समझदारी से खेतों में प्रयोग कर सकते हैं। आज रासायनिक खाद, और दवाईयों से पैदावार अधिक तो हो रही है, लेकिन इससे स्वास्थ्य में प्रतिकुल प्रभाव पड़ने के कारण बीमारियॉ अधिक हो रही है। कृषि विषय में पढ़े लिखे छात्र आगे चलकर हमें यदि व्यवसाय के रूप में अपनाते हैं तो वे आर्गेनिक खेती की ओर ध्यान देकर गोबर खाद, केंचुआ खाद हरी खाद आदि का प्रयोग कर भूमि की उर्वरा शक्ति को अक्षुण्य बना सकते हैं। इस प्रकार की खेती से उत्पन्न खाद्य पदार्थ सभी के स्वास्थ्य के लिये उत्तम होगा।

आटोमोबाईल -

संस्था में आटोमोबाईल का सकाय प्रारंभ विद्यालय प्रमुख के भरसक प्रयत्नों के फलस्वरूप हुआ। छात्र बड़ी संस्था में आटोमोबाईल संकाय में दर्ज हो रहे हैं कोविड की वजह से गत वर्षों में दर्ज संख्या में गिरावट हुई थी, किन्तू इस वर्ष इस संकाय के प्रारंभ होने से संस्था में वृद्धि में हुई। आगामी वर्ष में उत्तरोतर वृद्धि की संभावना है, इस संकाय में छात्र रूचि प्रदर्शित कर रहे हैं, विभिन्न इंजनों की कार्य शैली और निर्माण संबंधी अध्ययन कराया जा रहा है। पहियों में हवा का दबाव, घर्षण, ब्रेक, चेन, इंजन, ऑईल के परीक्षण और रख रखाव की शिक्षा प्रदान की जा रही है। छात्रों और शिक्षकों के मध्य सीखने और सिखाने की स्पर्धा निरंतर चल रही है। विद्यार्थियों द्वारा घरों में उपलब्ध पुराने दो पहियों को लाकर विद्यालय में वर्कशाप तैयार करके प्रयोगशाला निर्मित की गई है। समुदाय का सहयोग भी मिल रहा है। समय-समय पर कार मेकेनिक, बाईक मेकेनिक के द्वारा प्रयोगशाला में कुशलता पूर्वक छात्रों को प्रायोगिक जानकारियां प्रदान करने की व्यवस्था किया गया है। छात्रों की रूचि आगे पढ़ाई करके मेकेनिकल इंजिनियर और स्व रोजगार की ओर ध्यानाकर्षन किया जा रहा है, जिससे आगे

चलकर वे बेरोजगारी की मार से बच सके और आजीविका के साधनों का निर्माण स्वयं कर सकेंगे और आत्मनिर्भर बन पाऐंगे।

स्टेनोग्राफी -

संस्था में शार्ट हेण्ड या स्टेनोग्राफी की पढ़ाई भी वोफेशनल कोर्स के रूप में किया जा रहा है। इस कोर्स में कन्याओं की रूचि ज्यादा है, जिससे वे इस ओर अधिक आकर्षित हो रहे हैं। शासकीय कार्यालयों में ओर निजी संस्थाओं में भी स्टेनोग्राफी की मांग रहती है इसलिए शासकीय सेवा में उच्च अधिकारियों के साथ कार्य करनी की मंशा के चलते इस विधा में छात्र पारंगत होना चाहते हैं। एक प्रशिक्षित दक्ष कुशल स्त्रोत शिक्षक के होने से इसकी पढ़ाई आसान हो रही है। विद्यालयीन छात्रों के परिवार के कुछ सदस्य उच्च शासकीय कार्यालयों में स्टोनोग्राफर के रूप पदस्थ होकर सेवाऐं दे रहे हैं। इनको देखकर उत्साही छात्रगण इनकी तरह ही बनने का सपना संजोए पढ़ाई की तैयारी कर रहे हैं।

समय-समय इस संस्था में केरियर गाईडेन्स की व्यवस्था की जाती है। इसमें समाज से बुद्धिजीवी वर्ग के लोग आकर छात्रों को समझ बनाने में सहयोग करते हैं। रोजगार के नये अवसरों और स्वरोजगार, बैंको से मिलने वाले ऋण अल्पबचत पोस्ट आफिस, बीमा, इत्यादि की जानकारी दी जाती है।

होम साईंस -

विद्यालय प्रमुख ने जनभागीदारी के द्वारा अपनी संस्था में गृह विज्ञान की कक्षाओं को प्रारंभ करवाया है। प्रत्येक छात्र प्रतिदिन अपनी रूचि और आवश्यकताओं के आधार पर विषय की बारीकियों को सीख रहे हैं। गृह विज्ञान विषय की पढ़ाई करने वाले आगे चलकर बड़े-बड़े होटलो में भोजन निर्माण प्रमुख के रूप में रोजगार पा लेते है या स्व रोजगार के द्वारा अच्छी कमाई कर ले रहे हैं। अचार, पापड़ या खाने की वस्तुओं का मांग बाजार में बढ़ गई है।

क्रीड़ा -

विद्यालय से लगे हुए खेल मैदान में प्रतिदिन खेल अवकाश पर इस संस्था के खेल शिक्षक, छात्रों को, खेलों की तकनीके जानकारी देते हुए खेल कराते हैं, छात्र छात्राओं को कबड्डी, खो-खो, गोला, फेंक भाला फेंक, दौड़, लम्बी कूद, ऊंची कूद, रिले रेस, क्रिकेट, हॉकी, फुटबाल के खेल को कराया जा रहा है। छात्रों की रूचि और क्षमता को ध्यान में रख कर विभिन्न खेलों हेतु इनकी टीम बनाई गई है, ओर प्रतिदिन अभ्यास करवाया जा रहा है। बेडमिन्टन, टेबल टेनिस और हेण्ड बाल को भी इन्हें सिखाया जाता है। बड़ी संख्या में ये छात्र शाम तक अभ्यास में स्वस्पूर्त लगे रहते हैं। निरंतर अभ्यास से इनके प्रदर्शन कौशलों में सुधार हो रहा है। जिला और राज्य स्तरीय क्रीडा प्रतियोगिताओं में इस संस्था के छात्र/छात्राऐं शामिल होना विद्यालय का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। संस्था के छात्रों का प्रदर्शन में सुधार हेतू समय-समय पर कोच को आमंत्रित कर विशेष सलाह दिया जाता है। जैसे भाला फेंक, गोला फेंक, दौड़, तवा फेंक, जैसे एकल व सामुहिक खेल जैसे कबड्डी, खो-खो, फुटबाल, हॉकी इत्यादि।

प्रश्न-9 अध्यापन के साथ स्व रोजगार हेतु छात्रों को किस तरह तैयार किया जा सकता है?

.....

.....

.....

प्रश्न-10 अध्यापन एवं खेलों के द्वारा क्या रोजगार की प्राप्ति संभव हैं ?

.....

.....

.....

स्टुडेंट मेंटर्स केन्द्र

सारांश -

भारतीय षिक्षा आयोग 1964 ने अपने प्रतिवेदन में सटीक ही कहा था कि 'भारत के भविष्य का निर्माण कक्षाओं में होता है अतः इसके लिये एक विषिष्ट प्रयास की आवष्यकता है नेतृत्व के द्वारा विद्यालय प्रमुख अपने संस्था को अग्रिम पायदान पर पहुंचाने का प्रयास करता है, अथक परिश्रम क द्वारा संस्था की प्रत्येक गतिविधियों को बारीकी से ध्यान में रखते हुए संस्था में कार्यरत सभी के सहयोग से सभी का मनोबल ऊंचा करके लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। संस्था के उत्तरोत्तर प्रगति में समस्त कार्यरत सदस्यों का योगदान बहुमूल्य होता है। शाला प्रबंधन समिति के लोगों का भी सक्रिय योगदान प्रगति में बड़ा सहायक होता है। पालकों के साथ सुमधुर व्यवहार सतत संपर्क क्षेत्र के जन प्रतिनिधि और छात्र/छात्राओं के साथ अनवरत चर्चा से मन का जुडाव लोगों के साथ जुड़ता चला जाता है। इस प्रकार नामांकन की दर को बढ़ाने हेतु विद्यालय का टीम वर्क और इसको विद्या प्रमुख का नेतृत्व प्रदान करना एक निर्णायक आधार उपलब्ध कराता है। नई शिक्षा नीति 2020 में नेतृत्व पर अधिक बल दिया गया है। विद्यालय प्रमुख एक पेडो मेडिकल लीडर, मेनेजमेंट लीडर, नितिय और इस सबके साथ अपने टीम के सदस्यों को भी लीडर बनाने लायक उन्हें तैयार करना। इन सबका अन्ततोगत्वा प्रभाव छात्रों को पढ़ना चाहिए ताकि वे अपने जीवन में एक अच्छे लीडर के रूप में देश और समाज को नेतृत्व

देकर शिखर में पहुंचाने का जज्वा होना चाहिए। आज दुनिया भारत का नेतृत्व स्वीकार कर रही है इस वर्ष G20 का नेतृत्व भारत के प्रधानमंत्री कर रहे है

शिक्षा एक ऐसा हथियार है जिसके द्वारा राष्ट्र के समक्ष उत्पन्न चुनौतियों का मुकाबला किया जा सकता है। शिक्षा प्रदान करना सबके लिए शिक्षा सुलभ कराना संविधान में निहीत किया गया है। सर्व शिक्षा अभियान का उद्देश्य यही था कि शालाओं में छात्रों की दर्ज संख्या और उपस्थिति बढ़ाया जाए। शाला त्यागी छात्रों को विद्यालयों में ठहराव हो सके, वह आगे की कक्षाओं में पढ़ सके। शाला त्यागी छात्र यदि पढ़ने की आयु में शाला से बाहर रहते हैं तो वह राष्ट्रीय चिताओं का निर्माण करेंगे।

इन छात्रों को यदि विद्यालय में ठहराव कराते हैं तो इनका नामांकन में बृद्धि हो सकेगा। उत्तरोतर कक्षाओं में प्रगति संभव हो सकती हैं राष्ट्र की प्रगति राष्ट्र की युवा पीढ़ि के सुशिक्षित होने पर निर्भर है। सरकार के अथक प्रयासों से आज भारतीय समाज उन्नति के राह में अग्रसर है। साक्षरता की दर निरंतर बढ़ते क्रम में चल रही है। हमारे विद्यालयों में शिक्षक भरपूर प्रयत्न करके कक्षाओं में राष्ट्र निर्माण हेतु जागरण कर रहे हैं। विद्यालयों के प्रमुख छात्रों के हित में कार्य करते हुए नामांकन बढ़ाने में लगे रहते हैं, जिससे अधिक से अधिक छात्र सफल होकर शिक्षा के द्वारा अपने जीवन को प्रकाशित कर सकेंगे।

प्रश्न-1 विद्यालय में नामांकन किस प्रकार बढ़ाया जा सकता है?

.....

.....

.....

प्रश्न-2 देश कब तक सम्पूर्ण साक्षर बन सकता है?

.....

.....

.....

माड्यूल के लिये दी जाने वाली छाया चित्र संबंधी सामाग्री -

1- श्री राम कुमार प्राचार्य शा.उ.मा.वि. जगदलपुर
2. श्री लुप्तेश्वर आचार्य प्राचार्य शा.उ.मा.वि. करितगांव वि.खं. बकावण्ड

चन्द्रकांत पानीग्राही व्याख्याता डाईट बस्तर सन् 2023